आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Weekly Aryodaye No. 374 ARYA SABHA MAURITIUS *4th Sept. to 11th Sept. 2017*

Arya Bhawan, 1 Maharshi Dayanand St., Port Louis, Tel : 2122730, 2087504, Fax : 2103778, Email ID : aryamu@intnet.mu

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

ओ३म् दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

अथर्व० ३/२७/२

भावार्थ :- *दक्षिण दिशा में सम्पूर्ण ऐश्वर्ययुक्त परमात्मा सब जगत् का स्वामी है। कीट-पतंग, वृश्चिक आदि से वह परमेश्वर रक्षा करनेवाला है। ज्ञानी लोग उसकी सृष्टि में बाण के सदृश हैं। उनको हमारा नमस्कार हो। जो अज्ञान से हमसे द्वेष करता है और जिससे हम द्वेष करते हैं, उन सबकी बुराई को उन बाणरूणी मुख के बीच में दग्ध कर देते हैं। उन सबके ..... इत्यादि पूर्ववत्।* (सार्वदेशिक धर्मार्य सभा)

Om Dakshiṇā Dig-Indro-Adhipatis-Tirashchi-rājī Rakshitā Pitara Ishavah.
Tebhyo Namo-Adhipatibhyo Namo Rakshitribhyo Nama Ishubhyo Nama Ebhyo-Astu.
Yo-Asman Dvēṣṭi Yam Vayam Dvishmas tam vo jambhe Dadhmah.

Meaning of words :- **Dakshinā** - the south, direction from which it is believed prosperity increases, **Dik** - direction, **Indra** - God as the Lord of the highest glory and prosperity, **Adhipatih** - Lord, sovereign, **Tiraschirajih** - crawling creatures; one who rules over crawling creatures, **Rakshitā** - protector, **Pitarah** - intelligent persons / elders, **Ishavah** - arrows.

Purport :- *Indra, in all his glory, is the Lord of the south. This cardinal point symbolises prosperity and happiness. Indra protects us from crawling creatures just like arrows do. Whoever hates us or harbours hostile thoughts towards us and towards whom we may feel hatred, we submit to the judgement of the merciful God.*

Explanation :- Owing to His manifold attributes, God has innumerable names. In this mantra, He is addressed as 'Indra', the glorious Lord of prosperity. He is the sovereign of the south. As He is Omniscient, nobody can hide anything from Him. He is conscious of creatures who behave vilely. He is the sole judge. Therefore, we must not pass judgement on anybody.

Dr O.N. Gangoo

धर्म के लक्षण और साधन

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के.,आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा

'धृ' धातु से 'धर्म' शब्द बना है। 'धर्म' शब्द का अनुवाद 'Religion' रिलिज्यन शब्द से नहीं हो सकता। रिलिज्यन से अर्थ लगाते हैं- 'गिरजाघर जाना', 'मंदिर','मस्जिद', 'शिवालय' जाना। जो ऊपर लिखित पूजा के स्थानों को नहीं जाता वह रिलिज्यस नहीं कहलाता। जबकि 'धर्म' शब्द का आशय होता है 'कर्त्तव्य', जैसे पुत्र का कर्तव्य अपने माँ-बाप के प्रति क्या करना, याने पुत्र की 'ज्यूटि' अपने माँ-बाप के प्रति क्या फ़र्ज़ है?

'अग्नि' का धर्म है – प्रकाश, ऊर्जा एवं गर्मी प्रदान करना। लकड़ी जलकर बुझ जाय तो कोयला हो जाएगी या राख बन जाएगी। तब उसे आग या अग्नि नहीं बोलेंगे, क्योंकि उसका तत्त्व निकल गया। उसे छोड़कर चला गया।

आग जलती है तो ऊपर उठती है, और पानी बहता है तो नीचे की ओर जाता है। आग आगे-आगे जाती है। आग ऊपर उठने का प्रतीक है। आत्मा को भी ऊपर उठना है – जैसे हवन कुण्ड की अग्नि को जब प्रज्वलित करते हैं, तब वह ऊपर उठती है, वैसे ही आत्मा की उन्नति हो और मनुष्य ऊपर उठे।

वैसे धर्म की अनेक परिभाषाएँ हैं। कोई कहता है 'दया' धर्म का मूल है। कोई कहता 'अहिंसा' परम धर्म है लेकिन सैंकड़ों वर्ष पूर्व मनु महाराज ने धर्म के दस लक्षण गिनाये हैं, यथा –

घृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।।

'धृति (धैर्य), क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी (बुधि), विद्या, सत्य और अक्रोध' – ये धर्म के दस लक्षण हैं। जैसे अग्नि में उष्णता उसका तत्व है, इसी प्रकार एक सच्चे मनुष्य में ये दस लक्षण एक सच्चे मानव के तत्व हैं।

इन तत्वों को या धर्म को किस तरह धारण किया जाए ? मतलब वे कौन से साधन है, जिनसे धर्म की प्राप्ति की जा सकती है। महर्षि दयानन्द ने तीन आधार या तीन साधन बताये हैं। **यथा** –१. यज्ञ, २. अध्ययन और ३. दान। इन्हीं तीन साधनों को तीन स्कंधों की संज्ञा दी है। स्वामी जी ने इनका उऋण छान्दोग्य उपनिषद् से दिया है – **त्रयो धर्मस्कन्धाः यज्ञोऽध्ययनं दानमिति।**

ये तीन साधन धर्म नहीं। धर्म तो साध्य है और साधन का प्रयोग करने वाला साधक है।

खाली यज्ञ में अग्नि प्रज्वलित करके घी और सामग्री की आहुतियाँ दे देने से यज्ञ पूरा नहीं होता। इसके साथ-साथ वेद मंत्रों का उच्चारण करते हैं, ताकि हम वेद मंत्रों को पढ़ें और पढ़ाएँ, सुनें और सुनावें। इसी प्रकार दान भी करें। दान हमारी वैदिक संस्कृति का अभिन्न अंग है। दान केवल पैसे का नहीं होता। दान के विभिन्न रूप हैं, जैसे – ज़मीन का दान, समय का दान, श्रम दान आदि और विद्या दान तो सर्वसत्यदेव प्रीतम श्रेष्ठ दान है।

मनुष्य मात्र को धर्म के इन साधनों के माध्यम से पूर्वोक्त धर्म के लक्षणों को अपने जीवन में धारण करने का अभ्यास करना चाहिए।

सम्पादकीय

बैठका की उपज

हमारे पूर्वजों के जीवनकाल में बैठका एक महत्वपूर्ण स्थान होता था। गाँव वाले एक साथ बैठकर वहाँ अपनी दयनीय दशा पर सोच-विचार करते थे। अपने धर्म, संस्कृति, सभ्यता और भाषा आदि के उत्थान में विचार-विमर्श करते थे। एक-दूसरे के सहयोग से अपनी धरोहरों की रक्षा-निमित्त बैठका में ही निर्णय लेते थे।

बैठका वह स्थल था, जहाँ सत्संग, कथा-वाचन, भजन और उत्सवों का भव्य आयोजन होता था। हिन्दुओं के सारे उत्सव बैठका में ही मनाए जाते थे। रामायण और गीता पाठ उसी पवित्र स्थान में किया जाता था। सामूहिकरूप से ईश्वर-भक्ति करने का श्री गणेश उसी पावन स्थल से हुआ था। इसी लिए बैठका मन्दिर के समान पवित्र समझा और माना जाता था। हमारे पूर्वजों को उस जगह पर सुख, शान्ति और आनन्द का अनुभव होता था।

बैठका का योगदान है, हमारे धर्म, संस्कृति और भाषा की रक्षा। हमारी प्रिय भाषा भोजपुरी और हिन्दी की उत्पत्ति बैठका में ही हुई थी। प्राचीन पद्धति अनुकूल हिन्दी की शिक्षा वहाँ दी जाती थी। गुरु और शिष्य बड़े प्रेम से साथ मिलकर हिन्दी सीखते-सिखाते थे। सभी विद्यार्थी अपने गुरुजनों का बड़ा आदर-सम्मान करते थे और गुरुवर भी अपने शिष्यों को बड़ी लगन के साथ यथा शक्ति हिन्दी का ज्ञान देते थे। हमारे पूर्वजों के तप-त्याग और भाषा प्रेम द्वारा हिन्दी का उद्भव बैठका में हुआ था।

हमारे देश के प्रारम्भिक काल में हिन्दी शिक्षण धर्म का एक अंग रहा। गुरुजन प्रभु श्री रामचन्द्र जी की याचना करने के लिए अपने छात्रों को हिन्दी का ज्ञान प्रदान करते थे। उस समय बच्चों का मन बहलाने के लिए हिन्दी सिखाते थे। हिन्दी के माध्यम से राम और हरि-भजन आदि सिखाकर मनोरंजन प्रदान करते थे, जैसे कि –

राम नाम लड्डू, गोपाल नाम घीव।
हरि के नाम मिसरी, तव घोर-घार पीव ।।

इस प्रकार के भजन सिखाकर विद्यार्थियों को आनन्दित करते थे। इन्हीं गीतों के माध्यम से बच्चों को अपनी मातृ-भाषा का ज्ञान प्राप्त करने में रुचि बढ़ती थी और हमारी भाषा का विकास होता रहा।

हिन्दी भाषा को विकसित करने में आर्यसमाज, हिन्दी प्रचारिणी सभा तथा अन्य हिन्दू संस्थाओं ने सराहनीय कार्य किया है, जिनके अद्वितीय आंदोलनों द्वारा हिन्दी अपना कदम बढ़ाकर प्राथमिक पाठशाला में पहुँची, फिर सरकार के सहयोग से माध्यमिक स्कूलों को पार करती हुई विश्व-विद्यालय में पदार्पण किया। समयानुकूल हिन्दी स्नातकों की वृद्धि होने से उच्च स्तरीय हिन्दी शिक्षण प्रारम्भ हुआ।

हिन्दी के उत्थान में सरकार की ओर से प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। महात्मा गांधी संस्थान का पूरा योगदान रहा। भारतीय उच्चायोग की सहायता प्राप्त हुई। देश की विभिन्न संस्थाओं द्वारा अभियान चलाया गया। जिनमें पचास वर्षों से 'सरस्वती हिन्दू संगठन' हिन्दी की सराहनीय सेवा करता आ रहा है। हम समस्त हिन्दू परिवार इस संगठन के प्रति अति आभारी है।

बालचन्द तानाकूर

वेद मास के परिप्रेक्ष्य में –

सत्यदेव प्रीतम

स्वामी दयानन्द ने वेद की सर्वमान्य परिभाषा दी, 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' लोग समझेंगे कि सत्य विद्या का तात्पर्य केवल आध्यात्मिक विद्या से होता है। इसलिए इसमें 'पदार्थ विद्या' भी जोड़ दिया गया।

वेद ज्ञान ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है। इस लिए उसे ईश्वरीय ज्ञान की संज्ञा दी गई है। वैदिक शब्दों के विभिन्न अर्थ होते हैं। 'ज्ञान' का अर्थ प्रकाश भी होता है। यह भौतिक प्रकाश नहीं है। यह आध्यात्मिक प्रकाश है जो मनुष्य के मन व मस्तिष्क के अन्दर की अज्ञानता के अन्धकार को दूर भगा देता है।

वेद मंत्रों को ऋचाओं के नाम से भी जाना जाता है, इन्हीं ऋचाओं में वेद-ज्ञान निहित है, जिसका वर्गीकरण करके चार भागों में बाँट दिया गया है। **यथा**– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ।

विषय वस्तु की दृष्टि से वेद में चार विषय हैं – 'ऋग्वेद' में *ज्ञान* है, 'यजुर्वेद' में *कर्म* का विधान, 'सामवेद' में *उपासना* और 'अथर्ववेद' में *विज्ञान* ।

मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त जितनी बातों की आवश्यकता पड़ती है, उनमें सब निहित हैं। मनुष्य के इहलोक और परलोक दोनों को बनाने का प्रावधान है।

पर इसका मतलब यह नहीं कि यदि कहा गया कि ऋग्वेसत्यदेव प्रीतम द में ज्ञान है तो कर्म व स्तुति-प्रार्थना उपासना के विचारों का उल्लेख नहीं ।

वेद 'श्रुति' है, शास्त्र नहीं । वेद से शास्त्रों की उत्पत्ति मानी जाती है। जैसे – वेदान्त, ११ उपनिषदें, वेदांग - (वेदों के अंग), जैसे - शिक्षा, व्याकरण, निघण्टु, ज्योतिष चन्द्र और कल्प। उपवेद चार हैं – १. आयुर्वेद २. गन्धर्ववेद ३. धनुर्वेद और अर्थवेद। दर्शन शास्त्र छः हैं – १. न्याय दर्शन, २. योग दर्शन, ३. मीमांसा दर्शन, ४. वैशेषिक दर्शन, ५. सांख्य दर्शन और ६. वेदांत दर्शन।

यजुर्वेद के ४० वें अध्याय में एक मंत्र आया है – जो १४ वाँ मंत्र हैं।

विद्याञ्चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह ।
अविद्या मृत्युं तीर्त्वा विद्याऽमृतमश्नुते ।।

ईशोपनिषद् में यह ११ वाँ मंत्र है। एक है 'विद्या' और दूसरा है अविद्या। 'अ' उपसर्ग के प्रयोग से एक शब्द उल्टा अर्थ वाला बन जाता है, जैसे – शान्ति-अशान्ति, पूर्ण-अपूर्ण आदि। पर इस मंत्र में 'अविद्या' शब्द 'विद्या' शब्द का विलोम नहीं हैं, अपितु पदार्थ विद्या है और पहला 'विद्या' शब्द सत्य विद्या है। इसी को स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज के पहले नियम में प्रयोग किया है ।

पहला शब्द 'विद्या' का मतलब है 'ज्ञान' और दूसरा 'अविद्या' का मतलब विज्ञान याने पदार्थ विद्या। केवल ज्ञान से मानव जीवन का उद्देश्य पूर्ण नहीं होता न ही केवल 'कर्म' से। ज्ञान प्राप्ति के बाद ही 'कर्म' का नम्बर आता है। मनुष्य-योनि कर्म-योनि है। अच्छे कर्म का अच्छा फल और बुरे कर्म का फल अच्छा नहीं। पहला पुरस्कार और दूसरा दण्ड। धर्म, अर्थ, काम की प्राप्ति के बाद ही मोक्ष मिलता है। जन्म-मरण के चक्कर से छूट जाना। यहीं जीवन का परम उद्देश्य है।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए., ओ.एस.के, सी.एस.के., आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम,आर्य भूषण*
(४) प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेसर, *डी.एस.सी, जी.ओ.एस.के., आर्य भूषण*
(५) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
(६) *लीलामणि करीमन,एम.ए.,वाचस्पति*

इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं। लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।

Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.

मुख्य सम्पादक

Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038.

आर्य सभा मॉरीशस

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन

निमंत्रण-पत्र

सेवा में विदित हो कि आगामी **२१, २२, २३ नवम्बर २०१७** को आर्य सभा मॉरीशस एवं आर्य महिला मंडल मॉरीशस की ओर से त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। सम्मेलन में भाग लेने के लिए आर्य सभा मॉरीशस आप सभी को सविनय निमंत्रण भेज रही है।

तीनों दिनों का कार्य आर्य भवन, पोर्ट लुई में संपन्न होगा ।

नम्र निवेदन है कि सक्रियरूप से भाग लेनेवाले सभी सदस्य-सदस्याएँ शीघ्रातिशीघ्र अपना सहयोग निम्न प्रकार से प्रदान करने की कृपा करें, ताकि यह सम्मेलन पूर्ण सफल हो :–

(१) आर्थिक द्वारा
(२) आलेख भेजकर
(३) अपनी उपस्थिति द्वारा

आलेख का मुख्य विषय है : 'नारी का उत्तरदायित्व'

सहायक विषय हैं – (१) वेदों में नारी का अधिकार
(२) नारी शिक्षा और संतान-निर्माण
(३) धर्म, संस्कृति और भाषा की रक्षा में नारी की भूमिका

पूर्णालेख प्रस्तुत करने का निर्धारित समय है – १० मिनट
आलेख भेजने की अंतिम तिथि है – अक्टूबर के अंत तक
विशेष *– अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु आप कृपया इन महानुभावों से सम्पर्क स्थापित करें।*

(१) श्रीमती यालिनी रघु – 57712073
(२) श्रीमती लीलामणि करीमन - 57879210
(३) आर्य सभा मॉरीशस - 2122730 / 2087504

राजेन्द्रचन्द मोहित जी का शानदार व्यक्तित्व

श्रीमती भागवन्ती घूरा

सौभाग्यवश जन्म से मिला था धार्मिक सम्पन्न परिवार ।
नाम पाये थे राजेन्द्रचन्द पिता की इच्छा अनुसार
मानते थे पिता की आज्ञा अपना जन्म सिद्ध अधिकार।
घर-परिवार के थे नन्द, समाज के लिए सज्जन।
गुण-कर्म-स्वभाव से थे भरत और किसन ।
छोटे-बड़े सब लोगों के थे मन-भावन।
फ़ितरत से थे दरियादिल और दयावान ।
गिरे हुए को उठाना, झुके हुए को सँवारना ।
भूले-भटके को सलाहना थी उनकी एक करामात ।
शुद्ध विचार और शुभ कर्म से बना जीवन शानदार।
उपकारी जन से होता है ही समाज का उत्थान ।
समय आने पर निःस्वार्थ भाव से दिये योगदान।
उत्तम कर्म से पाये आर्य-जगत् में मान ।
सच्चाई-दया-धर्म था उनका आभूषण।
इक्यासी साल का रहा उनका एक स्मरणीय शानदार जीवन।

आर्य सभा मॉरीशस एवं ग्राँ पोर आर्य ज़िला परिषद् ने २० अगस्त को कृतज्ञता-ज्ञापन-हेतु 'गोविन्द्रामेन आश्रम' के पास 'एक वैदिक केन्द्र' का उद्घाटन किया और उस केन्द्र का 'राजेन्द्रचन्द मोहित वैदिक केन्द्र' से नामकरण किया गया ।

वेद-ज्ञान की बहती धारा से मानव पाषाण युग से आज ज्ञान-विज्ञान के युग में जी रहा है। अतः ऐसे केन्द्र के गतिशील होने से हम वैदिक धर्म से और अधिक अवगत होंगे और मानव का कल्याण होगा । इस पुण्य ऊदगत स्थान से आर्य जगत् की शान बनी रहेगी, वेद की ज्योति जलती रहेगी और आर्यसमाज अमर रहेगा ।

विनती है ईश्वर की कृपा बनी रहे और कार्य आशापूर्ण होवे ।

धन्यवाद

शब्दकोश का जनक

क्या आपने कभी सोचा है कि सम्बन्धित भाषा के हज़ारों-लाखों शब्दों और उनके सही अर्थों को एक स्थान पर संकलित करने की यह अलौकिक परिकल्पना आखिर किसकी है?' कौन है वह व्यक्ति, जिसने सर्वप्रथम इस कठिन और दुष्कर कार्य को करने के लिए लाखों शब्दों का संग्रह किया? हम आपको उस शब्दकोष के जनक अर्थात् जन्मदाता के सम्बन्ध में जानकारी दे रहे हैं।

विश्व में जब शिक्षा और साहित्य का विकास हो रहा था, तब सिप्तम्बर १७०९ में लिकफिल्ड में एक पुस्तक विक्रेता के घर एक बालक का जन्म हुआ, जिसका नाम सेमुएल जॉनसन (Samuel Johnson) रखा गया। जॉनसन के पिता एक निर्धन व्यक्ति थे, बचपन में जॉनसन हमेशा बीमार रहता था और उसका सही इलाज न हो पाता था। इसी लिए उसका अधिकतर जीवन बीमारावस्था में गुज़रता गया, लंडन में भारी इलाज करने के बाद भी, उसका चेहरा स्थायी रूप से विकृत हो गया था और उसकी एक आँख भी खो गई थी; फिर भी वह शिक्षा की ओर प्रभावित होता रहा। सन् १७२८ में १९ वर्ष की आयु में वह अपने एक परममित्र के सहयोग से ओक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अध्ययन हेतु गया। परन्तु आर्थिक स्थिति खराब होने पर वह बिना स्नातक की उपाधि प्राप्त किए वापस लौट आया।

जॉनसन ने अपनी आजीविका निमित्त एक स्कूल खोला, फिर भी उसे कोई आर्थिक लाभ नहीं हुआ। स्कूल की असफलता के बाद, वह अपने एक छात्र के आर्थिक सहयोग द्वारा लंडन चला गया। सन् १७३८ में वह लेखन कार्य की ओर अग्रसर हुआ। उसकी कई कृतियाँ छपकर बाज़ार में आईं, तब भी आर्थिक रूप से उसे कोई लाभ नहीं हुआ। लेखक बनना शायद जॉनसन का उद्देश्य नहीं था। वह तो जैसे किसी और ही खास काम के लिए दुनिया में आया था। उसके कल्पनाशील मस्तिष्क में सृजित होने वाली योजना सन् १७४७ में उसके द्वारा अंग्रेज़ी भाषा में शब्दकोष तैयार करने की घोषणा लोगों के सामने आई।

सामुएल जॉनसन बिल्कुल सम्पूर्णभाव से शब्द-संकलन के कार्य में जुट गया। वह रात-दिन शब्दकोष तैयार करने में तल्लीन रहता था। अंततः उसकी कड़ी मेहनत रंग लाई और सन् १७५५ में संसार का पहला शब्दकोष प्रकाशित हुआ, जो एक अलौकिक देन है।

प्रथम शब्दकोष प्रकाशित होने के बाद जॉनसन को इतनी अधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई कि उसका नाम रोशन हो गया। प्रकाशन कार्य के २० वर्षो बाद सन् १७७५ में ओक्स्फोर्ड विश्वविद्यालय (Oxford University) ने जॉनसन को डॉक्टर ऑफ लॉ (Doctor of Law) की मानव उपाधि से सम्मानित किया, जहाँ से उसे ५० वर्ष पूर्व धन के अभाव में बिना डिग्री के खाली हाथ लौटना पड़ा था। इस जिंदादिल मस्तमौला व्यक्ति ने साहित्य संसार को शब्दकोष की परिकल्पना के रूप में हमें अनुपम भेंट दी। उसी महान् व्यक्ति की प्रेरणा से प्रेरित होकर अनके भाषाओं में शब्दकोश तैयार होने लगे ।

सेमुएल जॉनसन तो सन् १७८४ में ७५ वर्ष की अवस्था में हमेशा के लिए संसार से चला गया, परन्तु शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सदा के लिए वह अमर रहेगा ।

बालचन्द तानाकूर
(साभार - हिदुस्तान पत्रिका)

महात्मा गांधी और प्राकृतिक चिकित्सा

विनय सितिजोरी, प्राकृतिक चिकित्सक

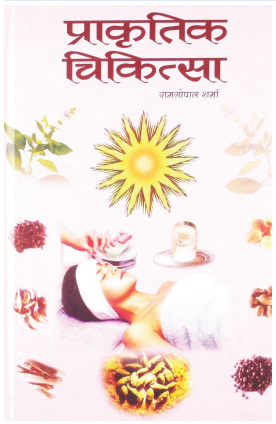

महात्मा गांधी एक महान् प्राकृतिक चिकित्सक थे। हम २ अक्टूबर को गांधी जयन्ती मनाते हैं।

सत्याग्रह के प्रवर्तक और अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी को करमचंद गांधी को अधिकांश लोग ऐसे राजनेता के रूप में जानते हैं, जिनके नेतृत्व में आज़ादी की लड़ाई लड़ी गई। बहुत कम लोग जानते हैं कि महात्मा गांधी जी खुद बहुत अच्छे प्राकृतिक चिकित्सक यानी नेचुरोपैथ थे - **नेचर क्युर प्राक्टीशनर** ।

विशिष्ट हेल्थ केयर उपलब्ध होने के बावजूद उन्होंने हमेशा नेचुरोपैथी को अपनाया और दूसरों को भी अपनाने की प्रेरणा दी। दो अक्टूबर गांधी जयन्ती के दिन को 'नेचुरोपैथी डे' के रूप में भी जाना जाता है।

महात्मा गांधी जी ने सर्वप्रथम भारत में प्राकृतिक चिकित्सा के आश्रम का निर्माण किया और हेल्थ पत्रिका 'आरोग्य की कुंजी' का संपादन किया था।

'रिटर्न टु नेचर' से प्रेरणा -

एडोल्फ़ जुस्ट की प्रसिद्ध पुस्तक 'रिटर्न टु नेचर' को पढ़ने के बाद वे उससे बहुत ज्यादा प्रभावित हुए थे, 'रिटर्न टु नेचर' से प्रेरित होकर बापू ने 'डायट और डायट रिफॉर्म' नाम की किताब लिखी थी। इसके अलावा उन्होंने और दो किताबें लिखीं। 'कुदरती उपचार' और 'रामनाम'। फिर 'आरोग्य की कुंजी' नामक पत्रिका का अनुवाद डॉक्टर विनोबा भावे जी से करवाया था।

प्राकृतिक चिकित्सालय की स्थापना -

गांधी जी प्रथम प्राकृतिक चिकित्सालय की स्थापना २३ मार्च १९४४ में पुणे से २७ किलोमीटर दूर उरूलिकांचन गाँव में की थी; जहाँ पर उन्होंने कुल ५६७ रोगियों को देखा था। पुणे में प्राकृतिक चिकित्सालय स्थापित होने से महाराष्ट्र ही नहीं, बल्कि दक्षिण भारत में भी इस थेरापी का प्रचलन सबसे पहले हुआ था। जो आज विश्व में फैला है ।

नचुरोपथी में बढ़ा भरोसा -

महात्मा गांधी जी को कब्ज़-मलावरोध की बहुत शिकायत रहती थी। कई तरह का इलाज करने के बाद भी आराम नहीं हो रहा था। आखिर में डॉ० दिनशाह के० मेहता की सलाह से उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा से अपना इलाज करने का फैसला किया। यह उनके लिए रामबाण साबित हुआ, क्योंकि उनका कब्ज़ ठीक हो गया। वे इससे बहुत प्रभावित हुए। अंग्रेज़ी दवाओं के साइड इफेक्ट्स से परेशान लोगों को उन्होंने नेचुरोपैथी से इलाज करने की सलाह दी। इसमें दो राय नहीं कि महात्मा गांधी की अवधारणाओं का आज भी पालन किया जा रहा है।

भारत में प्राकृतिक चिकित्सा की परम्परा बहुत पुरानी रही है। आधुनिक युग में इसके प्रचार-प्रसार का पूरा श्रेय गांधी जी को ही जाता है। आज पतञ्जलि आश्रम हरिद्वार में भी स्वामी रामदेव जी महाराज प्राकृतिक चिकित्सा का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

गांधी स्मारक प्राकृतिक चिकित्सा समिति, १५ राजघाट कोलोनी, नई दिल्ली ११००२ वाले एन.डी.डी.वाई छात्रों के लिए Sunrise University, Bagad Rajput, Tehsil, Ramgarh, District -Alwar Roy से Course - Bachelor of Naturopathy and Yoga (BNY) और M.A. in Naturopathy & Yoga. तीन और दो साल के Course करवा रहे हैं ।

बरात

श्रीमती लीलामणि करीमन, एम.ए., वाचस्पति

एक समय था जब,
बरात निकलती,
गली-गली के लोग सड़क-किनारे आ जाते,
बरात निकलती,
तो दूर-दूर तक गाड़ियों की तुरही सुनाई देती,
कारोस की गाड़ी के पीछे, गाड़ियों की कतार लग जाती,
बरात निकलती,
नई-पुरानी गाड़ियों का ध्यान भी रहता,
और मंज़िल एक साथ पहुँचने का आनन्द होता,
बरात निकलती,
तो बरात की शोभा अद्‌भुत थी, अनन्यमय थी,
व गाड़ी की सजावट निराली थी,
बरात निकलती,
तो देखने का जन-उत्साह बना रहता,
छोटे-बड़े सब देखने को ललायित रहते,
बरात निकलती,
तो तब की बात कुछ और ही थी।

एक समय है - आज जब सब मनमानी की धुन में।
दौड़ लगाते आगे निकलने की होड़ में।।
कौन कैसे मंज़िल तक पहुँचे किसी को परवाह नहीं।
दूल्हे को भी शानदार गाड़ी में बैठ जल्दी पहुँचने की है धुन ही ।।
बराती भटकते कभी इस गली, तो कभी उस गली ।
कभी इससे पूछा, तो कभी उससे,
जाना है किस गली ?
आधा समय बीत जाता गली की खोज में।
सही जगह पर तब पहुँचते जब भाग न ले सके दोमेले में ।
कभी द्वार पूजा चुक जाती, तो कभी परछावन,
शिकायत-गुस्सा भी करते तो मन ही मन।
शिकायत है, तो आज की पीढ़ी से ।
शिकायत है, तो जनता की सोच से।
शिकायत है, तो नई पीढ़ी के अज्ञान से।
शिकायत है, तो स्वत्व-अहं भाव से ।
शिकायत है, तो आधुनिक जीवन-शान से।
शिकायत है, तो अर्थ के अभिमान से ।
शिकायत है, तो धर्म-संस्कृति, सभ्यता के अपमान से ।
शिकायत है, तो अपने-आप से।
बस एक आशा बनी हुई है, अन्तर में,
वापस ले चलें नई पीढ़ी को प्राचीनता की ओर,
वापस ले चलें बच्चों को आर्य भाषा की ओर,
निर्माण करें सभ्य-शिष्ट-सुसंस्कृत नागरिक,
इस यज्ञ को करने का प्रण लेवें हर जन हार्दिक ।।

यज्ञ तथा यज्ञमय-जीवन

वानप्रस्थी विश्वदेव मुनि

जिस कार्य को कर्त्तव्य-धर्म समझकर मन में प्रसन्नता होती है, उसे यज्ञ कहा जाता है। जैसे - किसी वृद्ध का हाथ पकड़कर रास्ता पार कराना, यह एक यज्ञ है; एक भूखे को अन्न देने से हम एक यज्ञ करते हैं। हरेक काम जिससे किसी को सुख पहुँचाते हैं, तो मतलब हमने एक यज्ञ कार्य किया। ऐसे कामों को करना व्यक्ति के छः संस्कारों का प्रतीक है, सूचक है। यह गूढ़ अर्थ तभी हो सकता है, जब कार्य करने में अभिमान न हो, स्वार्थ न हो; कर्म के फल की आशा भी न हो – तब **'इदन्न मम'** – का भाव सार्थक होता है।

'हवन-यज्ञ' करते हैं, लोगों को आमन्त्रित करते हैं, पुरोहित को बुलाते हैं, दान-दक्षिणा देते हैं, सेवा सत्कार करते हैं, पंच का आशीर्वाद मिलता है आदि; यह सब बाह्य यज्ञ है।

इस यज्ञ का प्रभाव सृष्टि पर पड़ता है, वातावरण शुद्ध होता है। वायु के शुद्ध होने से वनस्पतियों को सतोगुण प्राप्त होता है, अन्न सुखदायी होता है। मनुष्यों को पशु-पक्षियों को अनाज मिलता है, बीमारियों को औषधियाँ मिलती हैं। अर्थात् जीवन का हर क्षेत्र उस यज्ञ से संबंधित है जिस को आंतरिक यज्ञ कहा जाता है, अन्यथा बाहरी यज्ञ का कोई अर्थ नहीं, कोई महत्त्व नहीं ! तभी तो वेदों तथा शास्त्रों में उपदेश आता है – **यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः।**

अर्थात् विद्वान् लोग ज्ञान यज्ञ से ईश्वर की पूजा करते हैं। (यज्ञ से यज्ञ उत्पन्न होता है।) संध्या (ब्रह्म-यज्ञ) - प्रातः शाम होती है, शरीर के स्थूल और सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म स्वस्थता और पवित्रता की प्रार्थना करते हैं; खान-पान में संयम हो; अन्त में ईश्वर से प्रार्थना करते हैं– **'जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां'** - धर्म से कमाये हुए धन से मोक्ष (ब्रह्मानन्द) की सिद्धि प्राप्त होती है – मन-वचन-कर्म में संतुलन होना अनिवार्य है।

यज्ञमय जीवन वह है जिसमें आनन्द ही आनन्द की अनुभूति होती है; हर हाल में खुशहाल; मान अपमान से प्रभावित न हो,जैसे – **विश्वदानिं सुमनस स्याम् ।** नकारात्मक जीवन से दूर !

जिस कार्य को करने से कार्यकर्ता अपना ही लाभ सोचता है तो उसे स्वार्थ-दोष लगता है; जब कुछ हाथ नहीं आता है तो दुखी होता है। स्वाभाविक है कभी-कभी ऐसे भक्त भी होते हैं, जो भगवान् को भी कोसते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए, लेकिन दुख-सुख में समान रहने से मन प्रफुल्लित रहता है।

हाँ, घर बनाना है, बच्चों को पढ़ाना है – इसमें सफलता मेहनत से, परिश्रम से, दृढ़ संकल्प से मिलती है और नीति कहती है – 'जितनी चादर उतना ही पैर पसार' - अर्थात् संतोष की भावना हो ! यह सब भौतिक साधना के अन्तर्गत है, इससे आगे आध्यात्मिक साधना अनिवार्य है; भौतिक साधन है, आध्यात्मिक साध्य है; तब परमानन्द की अनुभूति होती है।

आध्यात्मिकता का उदाहरण परमार्थ का सूचक है, उसमें उत्कृष्ट भावना प्रदर्शित है। वेदों में ऐसे उपदेश भरे पड़े हैं, जैसे यजुर्वेद में है – **तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।**

हरेक आर्य को यह मन्त्र कंठस्थ हो गया होगा तथा अर्थ भी ।

श्री कृष्ण भगवान् जी का उपदेश गीता ३/१३ में आता है – **'यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो.... ।'**

जो सन्त, अर्थात् सांस्कारिक व्यक्ति धर्म का मर्म समझता है, वह बाँटकर खाता है, अर्थात् बाद में अवशेष खाता है, और जो स्वयं खाता है दूसरे जरूरतमंदों की ओर ध्यान नहीं देता है, वह पाप खाता है – **'भुञ्जते ते त्व अधं पापा... ।'** *३/१३*

प्रातः-सायं गायत्री मंत्र बोलते हैं **'धियो यो नः प्रचोदयात्।'** अर्थात् हमारी बुद्धियों को कृपा करके सब बुरे कामों को दूर करके सदैव अच्छे कामों में उत्साहित करें। निःस्वार्थ भाव से करें और फल की आशा मत करें !

भागवद्‌गीता ४/२५ में आता है – **'ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति।'**

अर्थात् याज्ञिक, यज्ञ में सब कुछ ब्रह्म को समर्पित करता है– **'श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति।'** अर्थात् जो अपनी इन्द्रियों के विषयों को आहुत करता है, वह विषयों का गुलाम नहीं होता, क्षण भर के लिए भी नहीं, आजीवन के लिये, तब वह मोक्षानन्द भोगता है।

श्लोक ४/२७ में वही भाव है – ज्ञान द्वारा आत्मा संयम से रहकर, सब विषयों की आहुति चढ़ाकर आध्यात्मिक आनन्द प्राप्त करता है।

श्लोक ४/२८, २९, ३० में कर्म योग से द्रव्य, यज्ञ, तपो यज्ञ, स्वाध्याय-ज्ञान यज्ञ, प्राण यज्ञ का श्रीकृष्ण के उपदेश से भरे हैं, लेकिन ये सब यज्ञ निःस्वार्थ भाव से हों, समर्पित भाव से हों, सर्वस्व परमात्मा पर छोड़ दें, तो सही अर्थ से यज्ञ करते हैं। आशा भी न करें, नहीं तो दुखी होंगे। यही भागवद् उपदेश है - यज्ञमय जीवन। यही श्रीमद्‌भागवद् का प्राण है। प्राण ही निकल जाये तो गीत, मृतक कोरा कागज़ ही रह जायेगा ।

कहा जाता है – गीता और रामायण पाठ के साथ-साथ अर्थ सहित जानना अनिवार्य, आवश्यक है, उनके उपदेश पर आचरण करने से फल प्राप्त होता है, अन्यथा नहीं !

ऐसे यज्ञ के रहस्य जानने वाले यज्ञविद् होता है ।

Vyavahārbhānu

Ashrutashcha samunnaddho daridrashcha mahāmanāh |
Arthashchākarmanā prepsurmoodha ityuchyate budhai ||

(Mahabhārata udyogparva Viduraprajāgara 63/30)

Maharishi Dayanand Sarasvati explains this shloka :

He who has not acquired true knowledge; who has not listened to discourses by learned persons; who is very proud penniless; who talks about big fortunes; who wishes to accomplish marvels; and who desires to reap good results without putting the least effort is called an idiot.

General comments :

Human beings have limited knowledge *(jivātma alpajna)*. Only God is all-Knowledgeable (*ishvara sarvajna*). True knowledge (*vidyā*) empowers a person to be reasonable at all times. The real purpose of education filters down his thoughts, speech and physical actions, and enlightens his personality by his actions and reactions.

People pointing fingers should recall that three fingers are pointing towards the self. Fault-finding is indeed an easy task; people taking initiatives and assuming responsibilities are looked upon as rare species!!!

Contextual comments :

Primary and secondary school students are at a turn, the end of the present academic year. Those who have had a methodical approach throughout usually finish the final preparations for examinations and have sufficient time at hand to focus on problem areas. Constant efforts throughout the year boost up self-confidence, augur a less stressful aura, and are bound to yield good results.

Irregular students normally have lower confidence levels. The fear of failure overtakes their mind-set. This is the time they think that prayers will help them to fare through… alas! Prayers give solace only during the prayer time, but we all know within our inner self that prayer without efforts (*purushārtha*) serves little or no purpose.

The guidance from the Vedas, expounded by our rishis (sages/seers), if lived in day-to-day life, whatever be our profession will empower us to realise the prayer ***…vayam syāma patayo rayinām***. We shall indeed be masters of worldly and spiritual treasures.

Bramdeo Mokoonlall

[***Editorial note :*** Yogi Bramdeo Ji is holding classes on Vyavahārbhānu at a few Arya Samaj Mandirs on a monthly basis during the sāptahik Satsanghs after the Yajna. The above is a brief of his exposé in Hindi, English, French & Creole at Pailles Arya Samaj on Sunday 20 August last, where the audience is comprised mostly of students.]

Pandit Ramnik Cheetoo, le fondateur de Rodrigues Arya Samaj

Sookracharya Burthia

Pandit Ramnik Cheetoo est l'actuel président de Rodrigues Arya Samaj, la 474ème branche de l'Arya Sabha Mauritius est située à Port Mathurin.

Né le 11 Août 1957, à Camp de Masque, Flacq, son père, Narain Cheetoo était maitre d'école et membre de l'Arya Samaj. Apres un séjour au collège Eastern, Ramnik termina ses études secondaires au collège Eden de Rose Hill. En 1980, il a été élu secrétaire de la société coopérative de son village natal.

Marié à Mlle Meenakshi Tiwari, il est père d'une fille. Pour des raisons personnelles, il est allé vivre à Rodrigues avec sa petite famille en 2011. Il s'est lancé comme entrepreneur. Après quelque temps, il s'est engagé dans le travail social, ses réalisations méritent d'être mentionnées.

- 2013 : des séances de prières pour que l'île Rodrigues soit soulagée de la sècheresse.

- 2014 : fondation de 'Rodrigues Hindi Speaking Union' en sa demeure où se tiennent des réunions, des yajnas et des cours en hindi. Une cinquantaine de ses élèves participeront à des examens sous l'égide de l'Arya Sabha Mauritius.

- 2015 : premier Hindi Diwas avec Sir Anerood Jugnauth comme l'invité d'honneur en présence de S.E. Ashok Kumar alors Haut-Commissaire par intérim de l'inde à Maurice, l'Honorable Serge Clair, Chef Commissaire de Rodrigues et d'autres membres de Rodrigues Régional Council.

- 23 mars 2016 : fondation de Rodrigues Arya Samaj à Port Mathurin. L'invité d'honneur au lancement était S.E. Mons Paramasivum Vyapooree, le Vice-président de la république de l'île Maurice. Etait aussi présent, des membres de Rodrigues Regional Council et une délégation venue de l'île Maurice, dirigée par le président de L'Arya Sabha Mauritius, Dr Oudaye Narain Gangoo.

- 13 Octobre 2016 : le second Hindi Divas sous l'égide du Rodrigues Hindi Speaking Union s'est tenu en présence du Chef Commissaire de Rodrigues, l'Honorable Serge Clair et le Haut-Commissaire de l'Inde.

- 01 juillet 2017 : le premier anniversaire de Rodrigues Arya Samaj a L'hôtel le flamboyant.

Pt. Ramnik Cheetoo ne compte pas s'arrêteran si bon chemin. Il a d'autres projets en tête pour Rodrigues dont la construction d'un Arya Mandir à Port Mathurin est privilégiée. Cela renforcera son courage et sa détermination de transmettre les messages universels du Satyartha Prakash et les enseignements du Swami Dayanand Saraswati, ainsi que vulgariser l'apprentissage de la langue hindi.

Nous lui souhaitons plein de succès.

The First Step by 'Tolstoy'

टालस्टॉय- पहला कदम

Extract from Leo Tolstoy's book- First step-

We cannot pretend that we do not know this, we are not ostriches, and "We cannot believe that if we refuse to look at what we do not wish to see, it will not exist''. This is especially the case when what we do not wish to see is what we wish to eat.

लेओ टालस्टॉय की पुस्तक – **'पहला कदम'** से प्राप्त अवतरण में कहते हैं; कि हम बहाना नहीं बना सकते कि यह नहीं जानते हैं, हम शतुरमुर्ग नहीं हैं, हम यह मान नहीं सकते कि जिसे हम देखना नहीं चाहते उसे न देखने से उस वस्तु का अस्तित्व नहीं होगा। विशेष कर खाद्य-पदार्थ के बारे में ऐसा होता है कि जिसे हम खाना चाहते हैं हम उसके बारे में न जानने का बहाना बना लेते हैं।

How I became a vegetarian

Tolstoy himself tells how he became a vegetarian in his Recollections and Essays. Not long ago I had a talk with a retired soldier, and he was surprised at my assertion that it was a pity to kill for food, and said the usual about its being ordained. But afterwards he agreed with me: "especially when they are quiet, tame cattle. They become poor things trusting you. It is very pitiful."

वे बताते हैं कि वे शाकाहारी कैसे बने

अपने संकलन एवं निबन्धों में कहते हैं कि बहुत दिन नहीं हुए जब वे किसी अवकाश प्राप्त सैनिक से बात कर रहे थे कि अपने स्वार्थ के लिए किसी जानवर को मारना अनुचित है। सैनिक को इस बात से आश्चर्य हुआ। फिर बाद में वह इस बात से सहमत हो गया। खास कर जब उसने महसूस किया कि वे जानवर बेचारे कितने, शान्त, सहनशील और हम पर पूरा विश्वास निछावर किये होते हैं, और हम हैं कि उसी को बेदर्दी से मार के अपना पेट भरते हैं। जानवरों की हत्या का दर्द तो है ही, इससे बढ़ कर यह है कि ऐसा करते हुए मनुष्य अपने स्वार्थ पूर्ति में कितना निर्दयी बन जाते हैं। जानवर जो हम पर दया की अपेक्षा करते हैं, हम उन्हीं को मार कर कैसे खायें। ऐसा करके हम अपने ही आदर्शों की हत्या कर रहे हैं।

---I saw a kind refined lady will devour the carcasses off these animals with full assurance that she is doing right, at the same time asserting two contradictory propositions. First that she is so delicate that she cannot be sustained by vegetable food alone; secondly, that she is so sensitive that she is unable, not only herself to inflict suffering on animals, but even to bear the sight of the suffering.

एक बार एक सुशील सभ्य महिला मांस का टुकरा खाये जा रही थी, यह समझ कर कि वह ठीक कर रही थी। एक तो यह कि वह माँस के बिना सब्जी पर जी नहीं सकती थी, दूसरी बात यह कि वह न किसी जानवर को कष्ट पहुँचा सकती थी, न ही वह किसी जानवर का कष्ट देख सकती थी, फिर भी वह उसके गोष्ठ को खाना पसन्द करती थी।

"Whereas the poor lady is weak precisely because she had been taught to live upon food unnatural to man; and she cannot avoid causing suffering to animals-- for she eats them.

वह बेचारी इस लिए कमज़ोर पड़ गयी थी कि बचपन से ही उसमें अस्वाभाविक भोजन करने की आदत डाल दी गयी थी। मनुष्य अपने स्वार्थ के कारण मांसाहारी बना। यह सोचे बिना कि अपने जैसे किसी प्राणी को मार कर ही गोष्ठ मिलता है और दूसरे को मारना हत्या है।

The wrongfulness, the immorality of eating animal food has been recognised by all mankind during all the conscious life of humanity. Why, then have people generally not come to acknowledge this law? The answer is that the moral progress of humanity is always slow; but that the sign of true, not casual progress is its uninterruptedness and its continual acceleration. And one cannot doubt that vegetarianism has been progressing in this manner.

जानवरों को मार कर खाने की यह गलत धारणा, अनैतिक परम्परा को मानव-समाज ने अपने मानव-धर्म को जानते हुए पुरे होश-हवास में स्वीकृति दी है। फिर वह अपने इन्सानियत-धर्म की पहचान क्यों नहीं करता। इसका उत्तर यह है कि मनुष्यता की नैतिक प्रगति सदैव बहुत धीमी रही है। इस सम्बन्ध में सोचने-विचारने की क्षमता मनुष्य में बहुत कम है। फिर भी यह नकार नहीं सकते कि संसार के हर कोने में लोग शाकाहारी बनते जा रहे हैं।

The progress of the movement should cause special joy to those whose life lies in the effort to bring about the kingdom of God on earth, not because vegetarianism is in itself an important step towards that kingdom, but because it is a sign that aspiration of mankind towards moral perfection is serious and sincere.

इस क्षेत्र में जिन लोगों ने परमात्मा के आदर्श को धरती पर स्थापित करने का प्रयत्न किया है वे सचमुच प्रशंसा के पात्र हैं। यह सिर्फ़ इसलिए नहीं कि शाकाहारी जीवन-शैली अपने-आप में परमात्मा के आदर्श को प्रोतसाहित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयत्न है, बल्कि यह मनुष्यत्व को नैतिकता व चरमोत्कर्ष तक पहुँचाने की एक गंभीर और सच्ची पहचान है।

Contributed by Mr Jaypatee Poonit

Dr. Chiranjiv Bhardwaj Ashram

Donations from the Rosunee Family

Thursday 17 August 2017: A smriti Yajna was organised by Rosunee family, in memory of late Priya Sunkur Rosunee, who passed away a year ago. The family of the departed made a huge donation of Rs100,000 (One hundred thousand) for the construction of the second phase of the Dr. Chiranjiva Bhardwaj Ashram.

Late Mr Priya Sunkur ji was an active member of the Ashram's Committee who donate time and financial resources towards enhancing the welfare of the residents.

Among the individual donors so far, the Rosunee family has been the largest: (i) Mr Priya Dursan Rosunee : Rs 110,000; (ii) Mr Bhai Parmanand Rosunee: Rs 101,000; (iii) Mrs Poospawtee Rosunee (life-long earnings): Rs250,000; (iv) Late Mr Priya Sunkur Rosunee: Rs100,000 (*referred above*); and (v) their children: Rs10,000 Arya Sabha Mauritius, the members of the Dr. Chiranjiv Bhardwaj Ashram Committee and staff as well as the residents of the Ashram are grateful to the Rosunee family and to all other donors who are supporting this project.

A well-wisher of the Dr. Chiranjiva Bhardwaj Ashram